17 एनसीईआरटी की सामाजिक विज्ञान की नई पाठ्यपुस्तकें

सम्पूर्णा बिस्वास

सामाजिक अध्ययन की नई किताबों में पिछली किताबों की तुलना में निश्चित ही सुधार हुआ है। मैं अभी दसवीं कक्षा में हूँ और मुझे इस कक्षा में तथा इसके पूर्व नवमीं में इन नवीनीकृत किताबों को इस्तेमाल करने का मौका मिला। सबसे बड़ा अन्तर किताब की गुणवत्ता और उसके रूपरंग में आया है। ज्यादा रंग इस्तेमाल किए गए हैं, चित्र और कार्टून भी ज्यादा हैं और रेखाचित्र भी बेहतर कोटि के हैं। यह सब करते हुए किताब की अन्तर्वस्तु की गुणवत्ता में कोई कमी नहीं आने दी गई है।

किताब के स्वरूप में हुआ यह परिवर्तन सतही कतई नहीं है। यह ज्ञात तथ्य है कि ज्यादा लेखाचित्रों और रंगों से बेहतर समझ बनने में मदद मिलती है क्योंकि ये दिमाग के अधिक हिस्सों को उद्दीपित करते हैं। इसके अलावा इनसे किताब ज्यादा आकर्षक भी हो जाती है और लोग ऐसी किताबों का इस्तेमाल करना कहीं ज्यादा पसन्द करते हैं जिनका स्वरूप उन्हें अच्छा लगता है।

इतिहास

आठवीं कक्षा की इतिहास की किताब वाकई उबाऊ थी। उसमें सिर्फ दो ही रंग इस्तेमाल किए गए थे – काला और सफेद। और इनके बीच पड़ने वाले धूसर रंग की अनेक छटाएँ थीं। नवमीं और दसवीं की इतिहास की नई किताबें इससे बहुत अलग हैं। इनके बारे में जो पहली बात आप गौर करते हैं कि, अब इतिहास की किताब पहले के समान खुद इतिहास की किसी वस्तु जैसी नहीं दिखती। ऐसे रोचक अभ्यास–कार्य दिए गए हैं जिनमें पाठक को चित्रित किए गए काल विशेष की दृष्टि से सोचना और लिखना आवश्यक हो जाता है (उदाहरण के लिए पृष्ठ क्रं. 144 (एनसीईआरटी, कक्षा 10) पर यह प्रश्न दिया गया है : ''कल्पना कीजिए कि आप किसी चाल में रह रहे युवा व्यक्ति हैं। अपनी जिन्दगी के एक दिन का वर्णन कीजिए।''), या फिर विकल्प के रूप में पाठक को तथ्यों की अपने ढ़ंग से व्याख्या करने को कहा जाता है (उदाहरण के लिए पृष्ठ क्रं.24 (एनसीईआरटी कक्षा 10) पर दिया गया यह प्रश्न : ''आरेख क्रं. 17 में आप क्या देखते हैं? वर्णन करें। राष्ट्र को इस रूपक की तरह निरूपित करते हुए हबनर किन ऐतिहासिक घटनाओं की ओर संकेत कर रहे हैं?'')। इसके अलावा, विषय में आगे बढ़ने पर अतिरिक्त जानकारियाँ – जैसे उस काल के चित्र और उनमें हुआ चित्रण, या फिर तत्कालीन पत्र एवं अन्य स्रोत – आपकी रुचि जगाने में मदद करती हैं।

हालाँकि इन स्रोतों और वर्गों में दी गई जानकारियों पर परीक्षा में प्रश्न नहीं पूछे जाते, तथापि इनसे हमें वर्णित समय की बेहतर

तस्वीर बनाने में मदद मिलती है। सच तो यह है कि परीक्षा में शामिल न किए जाने के कारण इन्हें मैं मजे के लिए ही पढ़ जाती हूँ न कि याद करने के लिए। आठवीं और उसके बाद की किताबों में एक अन्य मूलभूत अन्तर जो मैंने पाया, वह किताबों की भाषा में था। नई किताबों की भाषा–शैली अधिक बोधगम्य है। करीब–करीब कहानी कहने की शैली का इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए पृष्ठ 36 पर छपे (एनसीईआरटी कक्षा 10), दूसरे अध्याय 'हिन्द–चीन में राष्ट्रीय आन्दोलन' का यह गद्यांश देखें : ''1926 में साइगॉन राष्ट्रीय कन्या विद्यालय में एक बड़ा विरोध फूट पड़ा। सामने की किसी सीट पर बैठी हुई एक वियतनामी लड़की को पीछे जाने के लिए कहा गया ताकि एक स्थानीय फ्रांसीसी छात्रा उस सीट पर बैठ सके। उस वियतनामी लड़की ने ऐसा करने से मना कर दिया। इस पर प्राचार्य ने, जो खुद भी कोलोन (उपनिवेशों में रहने वाले फ्रांसीसी लोग) था, उसे विद्यालय से निकाल दिया। जब नाराज विद्यार्थियों ने इसका विरोध किया तो उन्हें भी निष्कासित कर दिया गया, जिससे जगह–जगह खुले तौर पर विरोध प्रदर्शन होने लगे। स्थिति को नियंत्रण से बाहर जाता देख सरकार ने निष्कासित विद्यार्थियों को वापस लेने के लिए विद्यालय पर दबाव डाला। अनिच्छा के बावजूद प्राचार्य ने यह बात मान तो ली पर विद्यार्थियों को चेतावनी दी, ''मैं सभी वियतनामियों को अपने पैरों तले कुचल दूँगा। आह! तुम लोग चाहते हो कि मुझे निर्वासित कर दिया जाए। अच्छी तरह जान लो कि मैं तभी जाऊँगा जब मुझे यकीन हो जाएगा कि अब कोचिनचाइना में वियतनामी नही रहते।'' यह, ज्यादा से ज्यादा, एक कहानी है। इसमें ऐसा कुछ नहीं है कि कोई परीक्षा के दृष्टिकोण से इसे पढ़े। लेकिन इससे वियतनाम की स्थिति को बहुत अच्छी तरह से समझने में मदद मिलती है।

दूसरी ओर, आठवीं की किताब तथ्यों का संकलन ज्यादा थी। यदि आप ब्रिटिश शासन के बारे में हर बात विस्तार से बताने वाली किताब चाहते थे तब तो वह निश्चत ही अच्छी थी, पर अगर आप ऐसी रोचक सामग्री चाहते थे जो आप को इस विषय के बारे में आगे और जानने के लिए उत्सुक करे तो इसके लिए वह आदर्श साधन नहीं थी। कुल मिलाकर, नई किताबों से सीखना सुगम हो गया है क्योंकि वे विषय में दिलचस्पी जगा देती हैं, परन्तु यदि आप विषय के प्रति गम्भीर थे और आपको किसी परीक्षा के लिए रटना था तो पिछली किताब अच्छी थी।

राजनीति विज्ञान

इन किताबों की सबसे अच्छी विशेषता है कार्टून!! उन्नी और मुन्नी, तथा राजनीति वाले। इनसे पाठ्य सामग्री के बीच में अच्छी राहत मिलती है। अध्याय के साथ–साथ चलने वाले ये दो कार्टून किरदार, उन्नी और मुन्नी मुझे खासतौर पर अच्छे लगते हैं क्योंकि वे हमें अलग ढंग से सोचने और सवाल करने के लिए प्रेरित करते हैं। जब आप इन्हें पढ़ते हैं तो कभी–कभी ये बेतुके लगते हैं पर यदि उस बारे में गौर करें तो वे सचमुच आपको सोचने पर मजबूर कर देते हैं। उदाहरण के लिए यह प्रश्न देखें, ''यदि जातिवाद और साम्प्रदायिकता बुरे हैं, तो नारीवाद को किस आधार पर अच्छा कहा जा सकता है? हम उन सभी का विरोध क्यों नहीं करते जो समाज को जाति, धर्म या लिंग किसी भी आधार पर बाँटते हैं?'' और ''क्या आप यह सुझा रहे हैं, कि हड़ताल, धरना, बन्द और प्रदर्शन अच्छी चीजें हैं? मुझे लगा कि यह सिर्फ हमारे देश में होता है क्योंकि हम अब तक एक परिपक्व लोकतंत्र नहीं बने हैं।'' या ''क्या इसका यह मतलब है कि, जो भी पक्ष अपने साथ ज्यादा बड़ी भीड़ जुटा लेता है, वह जो चाहे कर सकता है? क्या हम यह कह रहे हैं कि लोकतंत्र में 'जिसकी लाठी उसी की भैंस' होती है?'' (एनसीईआरटी, कक्षा 10)। चलो अखबार पढ़ें/रेडियो सुनें/टीवी देखें/ वाले रूपकों के अन्तर्गत दी गई सामग्री भी अच्छी है। हालाँकि, विद्यालय में (खासतौर पर दसवीं में) तो शिक्षक पाठ्यक्रम को निपटाने में ही इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें ऐसी सामग्री को ढ़ंग से पढ़ाने की परेशानी उठाने की फुर्सत नहीं रहती। फिर भी यह अच्छी है क्योंकि सिर्फ प्रजातंत्र की सैद्धान्तिक समझ का क्या फायदा यदि हम इसे वास्तव में घट रही घटनाओं से नहीं जोड़ते?

दसवीं की एनसीईआरटी की किताब में एक त्रुटि है जो मैं बताना चाहूँगी। पहले अध्याय में श्रीलंका और बेल्जियम में अलग–अलग सांस्कृतिक समूहों से मिलकर बनी आबादी से जुड़ी समस्याओं की चर्चा की गई है। किताब में यह कहा गया है कि जहाँ समस्या सुलझाने का श्रीलंकाई तरीका – बहुसंख्यकों (सिंहलियों) की सरकार का शासन और अल्पसंख्यकों (तमिल लोग) के अधिकारों का दमन करना – असफल हो गया है, वहीं बेल्जियम द्वारा अपनाए गए तरीके – डच और फ्रांसीसी लोगों की सांस्कृतिक स्वतंत्रताओं में सामंजस्य स्थापित करना – ने ''दोनों प्रमुख समुदायों के बीच नागरिक संघर्ष टालने में मदद की और भाषाई आधार पर देश के सम्भावित बटवारे को रोका।'' पर, यह बहुत सही नहीं है, क्योंकि बेल्जियम में आज भी नागरिक संघर्ष की स्थिति बनी हुई है और इसी भाषाई आधार पर देश राजनैतिक रूप से विभाजित होने की कगार पर है।

हाँ, एनसीईआरटी के बचाव में आप यह जरूर कह सकते हैं कि शायद इस पुस्तक के प्रकाशन के वक्त वहाँ ये समस्याएँ न रही हों। फिर भी एनसीईआरटी को ऐसा वर्णन करने से बचना चाहिए। शायद, यह एक ऐसा समाधान था जो कारगर हो सकता था परन्तु ऐसा हुआ नहीं। पर हकीकत यही है, कि ऐसा मान लेने से बेल्जियम की स्थितियों में कोई वास्तविक सुधार नहीं हुआ है। एनसीईआरटी ने यह दर्शाने के लिए, कि सत्ता में सहभागिता अच्छी बात होती है, इस व्यवस्था को उदाहरण के रूप में पेश किया है। तो आखिर में इससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता।

आठवीं कक्षा में राजनीति विज्ञान पृथक विषय नहीं था और न ही उसकी अलग से कोई किताब थी। पर आठवीं की किताब में जो नागरिक शास्त्र का खण्ड था, उसकी तुलना में इन नई किताबों का रूपरंग काफी बेहतर है। ज्यादा रंगों का प्रयोग किया गया है, विशेषकर मानचित्रों में। नई किताबों में चित्र और पोस्टर भी निश्चित रूप से ज्यादा हैं। विभिन्न विषयबिन्दुओं को स्पष्ट करने के लिए असल जिन्दगी के अनेक उदाहरण इस्तेमाल किए गए हैं जिनसे प्रजातंत्र के बारे में हमारी समझ एक प्रकार से ज़्यादा ''वास्तविक'' हो जाती है। हमें जो बताया जाता है, वे केवल याद कर लिए जाने वाले तथ्य भर नहीं हैं; उनका आधार सफल व्यवस्थाएँ और असफल व्यवस्थाएँ हैं। वे वास्तविकता पर आधारित हैं। पाठों को ऐसे प्रत्यक्ष उदाहरणों द्वारा समझाया गया है जिनसे हम खुद को जोड़ पाएँ। चूँकि इसमें बहुत कुछ ऐसा है जो कक्षा से बाहर की दुनिया पर आधारित है और 'अभी घट रहा है', अतः इससे कक्षा में बहस का सूत्रपात भी होता है। मैं समझता हूँ कि यह सचमुच जरूरी है, विशेषकर राजनीति विज्ञान जैसे विषयों में, क्योंकि किसी मुद्दे पर बहस करने से हमें उसकी सार–वस्तु को कहीं बेहतर ढ़ंग से समझने में मदद मिलती है।

भूगोल

आठवीं कक्षा में राजनीति विज्ञान की भाँति भूगोल की भी अलग से कोई किताब नहीं थी। अतः सारी तुलनाएँ आठवीं की सामाजिक अध्ययन की द्वितीय किताब में दिए गए भूगोल के हिस्से के सापेक्ष की गई हैं।

एक बार फिर, किताब के बारे में जो पहली बात आपके दिमाग में आती है वह है उसका स्वरूप। पाई–चार्ट और मानचित्र ज्यादा आकर्षक हो गए हैं। नई सामग्री जैसे ''क्या आप जानते थे/क्या आप को पता था?'' बहुत दिलचस्प है। आलेखों में, और चित्रों के स्तर में भी सुधार हुआ है। किताब को और बेहतर बनाने के लिए उसमें पुनर्रचित अभ्यास और वर्ग–पहलियों का समावेश जैसे नए

प्रयास देखे जा सकते हैं। (कुछ वर्ग–पहेलियों में थोड़े सुधार की आवश्यकता है और मुझे अच्छा लगेगा यदि किताब में इनकी संख्या और अधिक हो ।)

एक दिन कक्षा में एक शंका उभरी जो मेरे विचार में आपको जानना चाहिए। किसी ने कहा कि कई अध्यायों में दी गई जानकारियाँ कभी–कभी एक–दूसरे से मेल नहीं खातीं। शिक्षक का कहना था कि सम्भवतः पुस्तक का सम्पादन कुछ हड़बड़ी से किया गया था।

भूगोल की किताबों में निश्चित ही सुधार की गुंजाइश है। कुछ वर्ग पहेलियों (अध्याय के अन्त में दी गईं) में काट–छाँट की जरूरत है। सम्भवतः कुछ जगहों पर अतिशय गद्य सामग्री को घटाकर उसकी जगह कुछ और चार्ट और आलेख देकर नीरसता से बचा जा सकता है। यह सचमुच और भी बढ़िया होगा यदि पाठ्यक्रम में प्रायोगिक भूगोल, जैसे स्थानों का भ्रमण करना जैसी गतिविधियों को भी शामिल किया जाए।

सम्पूर्णा बिस्वास *ने हाल ही में 12वीं पास की है। वे शुरुआत से ही दिल्ली में रही हैं और फिर भी वहाँ से उनका चित्त नहीं उचटा है। उन्हें पढ़ना, ब्लॉग लिखना, तैरना तस्वीरें खींचना अच्छा लगता है। इसके अलावा, लोगों से सवाल पूछना, बास्केटबॉल खेलना, कार्यक्रम तैयार करना, संगीत और डार्क चॉकलेट भी उनकी पसन्द हैं। उनसे इस sampoorna1992@yahoo.com ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*